

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
माध्यमिक स्कूल परीक्षा (कक्षा दसवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश-पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject : HINDI COURSE - A

विषय कोड Subject Code : 002

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : Thursday/12.03.15

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : HINDI

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखें
कोड को दर्शाए :
Write code No. as written on
the top of the question paper :

Code Number

3/1

Set Number

● ② ③ ④

अतिरिक्त उत्तर-पुस्तिका (ओं) की संख्या
No. of supplementary answer -book(s) used

विकलांग व्यक्ति : हाँ / नहीं
Person with Disabilities : Yes / No

NO

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएँ।
If physically challenged, tick the category

B D H S C A

B = दृष्टिहीन, D = मूक व बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक
C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक
B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged
S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic

क्या लेखन - लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं
Whether writer provided : Yes / No

NO

यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये
सॉफ्टवेयर का नाम :
If Visually challenged, name of software used :

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

7502782

002/50014

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

खण्ड - क

1. ग) भारत की स्थिति अन्य देशों के मुकाबले अच्छी है।
2. ii) क) लड़कियों का विवाह कच्ची उम्र में करवा देना
- iii) ख) बच्चों की सेहत, शिक्षा, सुरक्षा आदि के कानून बने
- iv) घ) विद्यालय और घर पर भी पिटाई होती है
- v) क) वंचित बचपन
3. i) ख) आत्मनिर्भर बने के लिए जरूरी था
- ii) क) आज़ादी के प्रति समर्पित लोगों का समूह तैयार करने के लिए
- iii) ख) कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं, सभी पेशे एक-समान हैं
- iv) ख) मर्यादाओं और मानव-मूल्यों का

3. v) क) देशशक्ति का ✓

i) ख) ऊँच-नीच और असमानता

ii) भाग्य पर नहीं कर्म पर विश्वास करना चाहिए → (क)

iii) ग) तू अखंड बंडर शक्ति का ; जाग , और निद्रा - सम्मोहित

iv) घ) दुर्घटन के प्रति आवाज उठानी चाहिए ✓

v) क) जब गरीबी, भ्रष्ट और लाचरी पर क्रोध नहीं आता

4. i) ग) प्राकृतिक आपदा

ii) ग) कोई हेलीकॉप्टर ऊँचे बचाने क्षमता पर आरगा

iii) घ) जम्मू और कश्मीर चाँद और कूल (जैसा) सुंदर हैं

iv) क) दूसरो को बचाने के कार्य में जुटी हैं ✓

ग) ख) पूरे शहर में पानी भर गया है।

खण्ड - ख

5. क) मिश्र वाक्य

ख) जैसे ही अलै पड़ने लगे, वैसे ही मैं बाहर जाकर उसे देखने लगा।

ग) नवाब साहब ने कुछ देर गाड़ी की खिड़की के बाहर देखा और स्थिति पर गौर करते रहे।

6. क) सभी दर्शकों द्वारा नाटक की प्रशंसा की गई।

ख) प्रेमचंद्र ने जोदान लिखा।

ग) उससे अब भी बैठा नहीं जा सकता।

घ) इन प्रश्नों में सत्यर कैसे सोर?

7. i) बालगोबिन आगत की - संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कर्मक, "देखा गया" क्रिया से संबंध

ii) इस - विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य - दिन

iii) जब - संबंधबोध्यन योजक

"बालगोबिन आगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष इस दिन देखा गया" और "उनका बेटा मरा" वाक्यों को जोड़ता है। उनमें संबंध बनता है।

ii) मरा - क्रिया, अकर्मक क्रिया, भूतकाल, कर्तृ वाच्य, ~~कर्मक~~

क. को i) शीघ्र रस

ii) भयानक रस

iii) हस्य रस

ख) वीर रस का स्थायी भाव "उत्साह" है।

खण्ड ग

9. क) मन्नू भंडारी के पिता की गिरती आर्थिक स्थिति का उन पर कामि अस्तर पड़ा। उनके पिता अपने बच्चों पर ज्यादा क्रोध करने लगे। ज्यादा शक्की मिजाज के हो गए। लेखिका को आश्वासन होता है कि उनके पिता अपने बच्चों से भी अपनी लुपचा नहीं बाटते।

ख) पहले इन्फैंस में उनकी आर्थिक स्थिति जरूर अच्छी रही होगी। तभी लेखिका ने गद्यांश में नवार्थ आदतों का जिक्र किया है। उन्हें किसी भी चीज की कमी नहीं रही होगी।

ग) मन्नू के पिता का स्वभाव शक्की हो गया था क्योंकि उनके अपनों ने उनके साथ विश्वासघात किया था।

10. क) लेखक नाटकों में स्त्रियों की भाषा प्राकृत होने को उनकी अधिका का प्रमाण नहीं मानता। उसने इसके विरुद्ध निम्नलिखित तर्क दिए हैं :

→ उस जमाने में प्राकृत ही प्रचलित भाषा रही होगी। इसलिए वह प्राकृत से बोलती होगी।

→ जब उस जमाने के पुरुष प्राकृत बोलते हैं तो उन्हें अशिक्षित होने का प्रमाण क्यो नही माना जाता।

ख) स्त्री शिक्षा के विरोधी निम्नलिखित तर्क देते हैं :

- अगर स्त्रियाँ शिक्षित हुई, तो समाज में उनका व्यवहार बहुत बुरा हो जायगा।
- प्राचीन काल में भी देखा गया है कि शकुंतला शिक्षित थी, इसलिए उसने दुर्योधन से कटु वचन बोले थे।
- देवी सीता ने भी श्री राम से कटु वचन शिक्षित होने के कारण बोले थे।

ग) इस दुनिया में बहुत सारे लोग हैं जो स्त्री शिक्षा के विरोधी हैं। ऐसे समाज में भी स्त्रियों के प्रति ऐसी खली सोच रखना उनके खुले विचारों का प्रतीक है।
उनमें इतनी हिम्मत थी कि वे प्राचीन काल से कभी आ रही सोच को खंडन कर सके।

घ) विश्वलला खां जीवन भर ईश्वर से यही मांगते रहे कि उनका सुर कभी न बिगड़े।

वह जानते थे कि उनकी इस समाज में भी इज्जत है, वह उनकी सुरीली शहनाई की धुन की ब्योला है। अगर उनका सुर बिगड़ा तो उनकी इज्जत

नहीं रहेगी। इसलिए वह दिखावे का कोई मोल नहीं रखते थे।
इससे पता चलता है कि वह कितने सरल स्वभाव के थे और वास्तविकता में विश्वास
रखते थे।

ड.) काशी में ही रहे निम्नलिखित परिवर्तन उनके व्यक्ति कर रहे थे:

- अब वहाँ कला की इतनी कसर नहीं होती जितनी पहले हुआ करती थी।
- अब वहाँ देसी दुकानें जैसे कचोड़ियों की, मलाई बस्फ आदि मिट रही थी।
- अब वहाँ प्राचीन काल के लोक गीत शैलियाँ जैसे झुरी, चैती आदि का कोई जिक्र भी नहीं करता था।

11. क) 'शरब जैसा' मुख्य गायक की बिगड़ते हुए सुर की दृष्टी आवाज के लिए
प्रयुक्त हुआ है।

जब गायक सुर से दूर जाने लगता है और उसकी आवाज बिखरने लगती है
तक ऐसा प्रतीत होता है कि शरब जैसा कुछ गिर रहा है उसकी आवाज में।

ख) जब मुख्य गायक गाने के ऊँची लेंथो में खो जाता है और उसका
गला बैठने लगता है तब उसकी प्रेरणा भी साथ छोड़ देती है।
गाने में वह उत्साह जैसी गुम हो जाता है।

ग) "इसका" मुख्य गायक के लिए प्रयुक्त हुआ है।

12) क) जब कोई चीज वास्तव में नहीं होती लेकिन हमें उसकी होने की अनुभूती होती है, उसे मृगतृष्णा कहते हैं। ज्यादातर इसे शैमिस्तान में देखा जाता है जब पानी के होने की अनुभूती होती है।

कविता में इसका प्रयोग जीवन में आने वाले अलक्षियों और बड़े बनने की यात्रा के लिए हुआ है।

जीवन में कभी कोई संतुष्ट नहीं रहा है। उसे जितना मिलता है, उसे हमेशा उससे ज्यादा की उम्मीद होती है।

ख) इस पंक्ति का भाव है कि जब सुख आने का अवसर होता है, अगर वह उस समय न आए और बाद में आए, तो उसका कोई मौल नहीं करता।

ग) 'कन्यादान' कविता में जिस लड़की की शादी हो रही थी, उसे कुछ बाँचना नहीं आता था।

वह अभी भी बहुत सरल और सीधी थी। उसे सुख की कल्पना थी, लेकिन जीवन में आने वाले सुखों की नहीं थी।

घ) 'कन्यादान' कविता की माँ परंपरागत माँ से भिन्न थी क्योंकि वह अपनी बेटी को सिखा रहे थीं कि अगर उसके साथ शोषण हो तो वह उसका विरोध करे।

आमतौर पर माँ अपनी बेटी को समुदाय दलने के लिए कहती हैं लेकिन इन्होंने इसके विपरीत उसे सारे काम कुशलता से करने को कहा पर किसी के आगे कमजोर होने को नहीं कहा। उसे हमेशा निडर रहने की सलाह दी।

ड) माँ की सीख में समुदाय में हो रहे शोषण की तरफ संकेत किया गया है। किस प्रकार बहुओं के प्रति ज्यादती में जाती हैं। उन्हें कितना सहन करना पड़ता है।

क) देश की सीमा पर बैठे हमारे रक्षा कर रहे हमारी हमारे सैनिक भर्तियों और बहनों ने हमारे सुस्था के लिए बहुत सारी कुर्बानियाँ दी हैं। अपने घर-परिवार से कौसों दूर, भारतीय सीमा पर आम नागरिकों की रक्षा करना, यह कोई आसान बात नहीं है। वहाँ पे वातावरण हमेशा सुरक्षित नहीं होगा। कभी भी गोली बारी हो सकती है। ऐसे माहौल में वह अपना सारा जीवन बिताते हैं।

उनके परिवार को उनका साथ सिर्फ साल के कुछ दिनों के लिए मिलता है।

कभी-कभी कुछ सैनिक अपनी जान भी गवा देते हैं हथारी सुरक्षा के हिस्से जावाज़ सिपाहियों से हमें बहुत कुछ सीखने की मिलता है। इनसे हमें जीवन मूल्यों रखने वाले असर लोगों का आह्वान मिलता है। जैसे:

- दूसरों की खुशी के लिए अपनी खुशी दांव पर लगाना।
 - अपने देश के लिए मर मिटना।
 - दूसरों की सहायता और सुरक्षा के लिए हर वक्त खपिर रहना।
- ऐसे जावाज़ सिपाहियों को हमारा शलाम....

खण्ड - ८

विदेशों के प्रति बढ़ता मोह

यह कोई नई बात नहीं की लोगों को विदेश जाने का बहुत शौक है। वहाँ के चाल-चल में खुद को डाल लेना। ऐसे बहुत से आह्वान हैं जिसमें लोग अपने देश को छोड़कर दूसरे देश में बस जाते हैं।

परंतु कोई यह नहीं सोचता की आगे बढ़ने के दौर में हम अपनी प्राचीन संस्कृति को छोड़ते जा रहे हैं। अपने के मूल्यों को भूलते जा रहे हैं।

ऐसा बहुत सुनने को मिलता है कि लोग दूसरे देश काम के मिलसिले में जा रहे हैं। उनका कहना है कि उन्हें अपने देश में वह पोंका नहीं मिलता जिससे वह अपने आप को साबित कर सकें।

यह कहना पूरी तरह से गलत भी नहीं होगा कि विदेशों में अपने आप को साबित करने के लिए सारे मौके होते हैं। वहाँ पे लोगों की कमाई ज्यादा होती है जिससे लोग अपना जीवन हर सुविधा का लुफ्त उठाते हुए व्यतीत कर सकते हैं। पूरे परिवार के लिए यह बहुत लाभकारी है। बच्चों के लिए अच्छे स्कूल, बूढ़ों बूढ़ों के लिए अच्छे अस्पताल और अच्छा इलाज। सब कुछ वहाँ बहुत अच्छा है जो सबको आकर्षित करता है। विदेश में रहने से लोगों के रहन-सहन में परिवर्तन आता है जिससे उनके जीवन जीने का अलग तरीका बन जाता है।

लोगों को यह बफलाव बहुत अच्छा लगता है।

जो लोग अपने देश में रहते हैं, उन्हें इन लोगों को सुखी देखकर और आकर्षित होता है वहाँ जाने की चाह और बढ़ जाती है। पर विदेश में रहने में सिर्फ सुख ही नहीं होता। विभिन्न पेशानियों का भी सामना करना पड़ता है। अगर किसी को वहाँ पे कारोबार स्थापित करना हो, तो उसे बहुत परिस्रम करना पड़ता है। वहाँ रहना बहुत मुश्किल भी है। वहाँ पे लोगों के पास पैसा ज्यादा होता है तो खर्चा भी ज्यादा होता है। हर चीज का दाम भी बहुत ज्यादा होता है।

पर चाहे कोई विदेश में कितना भी सुखी रह ले, अपना देश अपना ही होता है।

" चाहे धूमो उत्तर-दक्षिण,

चाहे धूमो पूरव-पश्चिम

इस सोन चिरैया का कोई मुकाबला नहीं "

असल सुख अपने भारत देश में ही है।

भारत माता कि छांव में हमें जो सुरक्षा मिलती है, वह दूसरे किसी देश में नहीं मिल सकती.....

पत्र लेखन

15.

नं 5, सुनहरी कोलनी,
 प्रताप नगर,
 नई दिल्ली - 102152

दिनांक - 12.03/15

प्रिय मित्र सुरेश,
 श्रुत स्नेह!

कैसे हो? आशा करता हूँ खुश होंगे। यहाँ पे भी सब कुशल है।
 परिहार बस खतम हुई है। नए साल और नई साल की तैयारी चल रही है। तुम्हारी
 भी परिहार खत्म हो चुकी होगी न

एक दिन मुझे तुम्हारा एक दोस्त मिला था और बातों-सी-बातों में मुझे पता चला
 की हाल ही में तुम्हारी अपने किसी दोस्त से लड़ाई हुई जिसमें गलती तुम्हारी
 थी। देखो दोस्त! लड़ाई-झगड़ा तो दोस्तों की पहचान होती है। हम दोस्तों में
 ही कितनी लड़ाइयाँ हुई हैं। कभी भी किसी की झगड़े की शक्ल मत बढाना
 की सुझाव करनी मुश्किल हो जाय। अगर गलती तुम्हारी है तो माफ़ी मांगने
 में भी मत हिचकिचाया।

आशा करती हूँ की तुम्हें मेरी बात समझ आदि होगी। अब जल्दी से इस
केसट से मुक्त कर मजे करो।

तुम्हारी वैस्त,
क. ख. ग.

16

सार लेखन :

शीर्षक - मधुर वचन

मधुर वचन सुनकर सबका हृदय प्रसन्न हो जाता है। मधुर वचन मीठी औषधि के
समान लगते हैं तो कड़े वचन तीर के समान चुभते हैं। मधुर वचन न केवल
सुननेवाले अपितु बोलनेवाले को भी आत्मिक शांति प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति अपनी
वाणी का दुस्प्रयोग करते हैं, उन्हें संसार में अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा खोनी पड़ती है।
यदि दुर्वचन समाज में ईर्ष्या, द्वेष, लड़ाई आदि दुर्गुणों को जन्म देते हैं। मधुर वचन संसार में प्रेम, भाईचारा
तथा सुखों का संचार करते हैं। मानव को संसार में सुख-शांति के लिए वाणी को सदा
सदुपयोग करना चाहिए।